अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

हिन्दी एवं पश्तो के समान छन्दों का व्यतिरेकी अध्ययन

A Comparative-Contrastive Study of Similar Metres in Hindi and Pashto

लेखक
Assistant Professor Dr Mohammad Fida Alakozay
Assistant Professor Ghufranullah Maroof
Assistant Professor Dr Saharmal Sahar

सारांश

छन्द काव्य का एक अनिवार्य और आधारभूत तत्व है, जो भाषा को लय, सौन्दर्य तथा संगीतात्मकता प्रदान करता है। हिन्दी काव्य की छन्द-परम्परा का विकास संस्कृत के समृद्ध छन्दशास्त्रीय आधार से हुआ है, जबकि पश्तो काव्य की छन्द-व्यवस्था मुख्यतः सिलाबोटोनिक प्रणाली पर आधारित मानी गई है। ऐतिहासिक और भाषिक पृष्ठभूमि में भिन्नता के बावजूद दोनों भाषाओं में मात्रा, लय, तुक, चरण तथा अन्य संरचनात्मक तत्वों के स्तर पर उल्लेखनीय साम्य दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिन्दी और पश्तो छन्दों की अवधारणा तथा संरचनात्मक तत्वों का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी विश्लेषण करना, समान छन्दों की पहचान करना और दोनों परम्पराओं की विशिष्टताओं को स्पष्ट करना है। अध्ययन में तुलनात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। हिन्दी और पश्तो छन्दशास्त्र से संबंधित ग्रंथों, काव्य-रचनाओं तथा छन्द-विषयक संदर्भ-ग्रंथों का अध्ययन कर वर्ण, मात्रा, गण/रुक्न, तुक, यति और चरण के आधार पर दोनों परम्पराओं की तुलना की गई है। अध्ययन में इन्द्रवज्रा, तोटक, मालिनी, अनुष्टुप, भुजंग प्रयात, पद्धरी/चौपाई और तोमर जैसे हिन्दी छन्दों के पश्तो समतुल्य छन्दों की चर्चा की गई है। निष्कर्षतः दोनों भाषाओं की छन्द-व्यवस्थाएँ पूरी तरह समान नहीं हैं, फिर भी उनके संरचनात्मक स्तरों पर पर्याप्त तुलनीयता मौजूद है, जो हिन्दी-पश्तो तुलनात्मक काव्यशास्त्र के लिए उपयोगी आधार प्रस्तुत करती है।

कुंजी शब्द

छन्द, मात्रा, व्यतिरेकी अध्ययन, गण, रुक्न, लघु, गुरु, सिलाबोटोनिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

1. प्रस्तावना

छन्द काव्य की वह संरचनात्मक व्यवस्था है जिसके माध्यम से शब्द, ध्वनि, लय और गति एक नियोजित रूप ग्रहण करते हैं। किसी भी काव्य-परम्परा में छन्द केवल बाहरी सज्जा का साधन नहीं होता, बल्कि वह काव्य की ध्वन्यात्मक संरचना और संगीतात्मक प्रभाव को व्यवस्थित करता है। हिन्दी में छन्दशास्त्र का विकास संस्कृत की दीर्घ परम्परा से जुड़ा हुआ है, जबकि पश्तो में छन्द-विधान ने अपनी विशिष्ट भाषिक प्रकृति के अनुरूप अलग रूप ग्रहण किया है। इस ऐतिहासिक भिन्नता के बावजूद दोनों भाषाओं के काव्य में कुछ ऐसे छन्दीय रूप दिखाई देते हैं जिनकी मात्रा, लय, तुक अथवा चरण-विन्यास के स्तर पर परस्पर तुलना की जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन इसी तुलनीय क्षेत्र को केन्द्र में रखता है।

2. शोध की समस्या

हिन्दी एवं पश्तो छन्द-व्यवस्था का व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

दोनों भाषाओं में प्रयुक्त छन्दों के संरचनात्मक तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है।

हिन्दी के वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों तथा पश्तो की सिलाबोटोनिक व्यवस्था के बीच संबंध को स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

समान छन्दों की पहचान और उनके संरचनात्मक स्वरूप का समुचित अध्ययन आवश्यक है।

हिन्दी एवं पश्तो साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए छन्दशास्त्रीय आधार को अधिक स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता अनुभव होती है।

3. शोध के उद्देश्य

हिन्दी एवं पश्तो छन्दों की अवधारणा का अध्ययन करना।

दोनों भाषाओं के छन्दों के संरचनात्मक तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

हिन्दी एवं पश्तो छन्दों की समानताओं एवं असमानताओं का अध्ययन करना।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

प्रमुख हिन्दी छन्दों के पश्तो समतुल्य छन्दों की पहचान करना।

दोनों भाषाओं की छन्द-व्यवस्था की विशिष्टताओं को स्पष्ट करना।

तुलनात्मक काव्यशास्त्र की दृष्टि से निष्कर्ष प्रस्तुत करना।

4. शोध पद्धति

यह शोध मुख्यतः तुलनात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। हिन्दी एवं पश्तो छन्दशास्त्र से संबंधित मूल ग्रंथों, प्रमुख काव्य-रचनाओं तथा छन्द-विषयक प्रमाणिक पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। हिन्दी के प्रमुख छन्दों तथा उनके पश्तो समतुल्य छन्दों का वर्ण, मात्रा, गण, तुक, यति, चरण एवं अन्य संरचनात्मक विशेषताओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। हिन्दी एवं पश्तो छन्दशास्त्र से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथों, संदर्भ-ग्रंथों और विद्वानों के मतों का अध्ययन कर शोध को सैद्धान्तिक आधार प्रदान किया गया है। विशेष रूप से वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों, सिलाबोटोनिक व्यवस्था, गण एवं रुक्न, चरण तथा तुक-विधान के पारस्परिक संबंध और भिन्नताओं को क्रमबद्ध रूप से देखा गया है।

5. छन्द की अवधारणा

'छन्द' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में एक मत इसे 'चद्' धातु से जोड़ता है, जिसका अर्थ प्रसन्न करना या आह्लाद उत्पन्न करना माना गया है। वर्णों या मात्राओं के नियमित विन्यास से उत्पन्न लयात्मक प्रभाव के कारण काव्य में छन्द का महत्त्व स्थापित होता है (Editorial Team)। पश्तो काव्य-परम्परा में 'वज़न' शब्द का प्रयोग छन्दीय व्यवस्था के अर्थ में भी होता है। हमकार के अनुसार मात्राओं की व्यवस्थित आवृत्ति तथा उनके बीच निर्धारित अंतराल से वज़न की संरचना समझी जाती है (Hamkar 7)।

छन्द का उल्लेख वैदिक परम्परा में मिलता है और आचार्य पिंगल का छन्दशास्त्रीय कार्य इस क्षेत्र की प्राचीन परम्परा का महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है। पश्तो छन्द के अध्ययन में रिशाद ने भी छन्दीय व्यवस्था पर विचार किया है (Rishad 44)। पश्तो काव्य को केवल अरबी अरूज़ के नियमों से समझना पर्याप्त नहीं माना गया है। रिशाद ने सिलाबोटोनिक नियम को पश्तो पद्य के लिए स्वाभाविक और प्रायोगिक माना है (Rishad 136)। हमकार भी पश्तो

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

काव्य की काव्यात्मकता के लिए सिलाबोटोनिक व्यवस्था की उपयोगिता पर बल देते हैं (Hamkar 12)।

6. छन्द के संरचक तत्व

छन्द की संरचना में वर्ण, मात्रा, तुक और यति जैसे तत्व महत्त्वपूर्ण हैं। पश्तो में भी इनसे मिलते-जुलते तत्व पाए जाते हैं, जिन्हें हमकार ने सपः (मात्रा), रुक्न (गण) और दौर (तुक) के रूप में प्रस्तुत किया है। हिन्दी छन्दों में वर्ण और मात्रा की गणना के साथ लघु-गुरु का विधान महत्त्वपूर्ण है, जबकि पश्तो में मात्रा के साथ बलाघात भी छन्दीय प्रवाह को प्रभावित करता है। इसी कारण दोनों भाषाओं में समान संख्या वाली मात्राएँ मिलने पर भी उनकी आंतरिक लय पूर्णतः समान मानना उचित नहीं है।

हिन्दी में छन्दों के दो प्रमुख प्रकार माने जाते हैं–वर्णिक और मात्रिक। वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या तथा उनके क्रम का ध्यान रखा जाता है, जबकि मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या को आधार बनाया जाता है। लघु को सामान्यतः एक मात्रा और गुरु को दो मात्रा के मूल्य से जोड़ा जाता है। इसके विपरीत, प्रस्तुत स्रोत के अनुसार पश्तो छन्द में दीर्घ और लघु दोनों को गिनती में एक-एक मात्रा माना जाता है और मात्रा के साथ बलाघातात्मकता भी महत्त्वपूर्ण होती है। पश्तो में वाज़ा और तड़लि जैसी मात्रात्मक व्यवस्थाओं का भी उल्लेख मिलता है (Hamkar 28)।

7. गण और रुक्न

गण का अर्थ समूह है। हिन्दी छन्दशास्त्र में लघु-गुरु के नियत क्रम से बने तीन वर्णों के समूह को गण कहा जाता है। हिन्दी में आठ गण माने जाते हैं–यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण। पश्तो काव्य में गण के निकटतम तुलनीय तत्व को 'रुक्न' कहा गया है। हमकार ने पश्तो छन्द के रुक्नों के लिए सदर, अरूज़, मुब्तदा, ज़र्ब, उज्ज़ और हश्वः जैसे नामों का उल्लेख किया है, हालांकि स्रोत में स्वयं यह स्पष्ट किया गया है कि यह नामकरण सर्वमान्य नहीं है (Hamkar 31)।

गण	लक्षण	चिह्न	उदाहरण
मगण	त्रिगुरु	sss	श्रीदुर्गा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

नगण	त्रिलघु	।।।	रचय
भगण	आदिगुरु	s।।	श्रीमति
यगण	आदिलघु	।ss	मनीषा
जगण	गुरुमध्यगत	s।s	मधूनि
रगण	लघु-मध्य	।s।	कौमुदी
सगण	अन्तगुरु	।।s	कमला
तगण	अन्तलघु	ss।	सर्वाणि

8. चरण और तुक

हिन्दी छन्द में चरण-विन्यास का विशेष महत्त्व है। सामान्यतः चार चरणों वाले छन्दों में दूसरा और चौथा चरण समचरण माने जाते हैं तथा पहले और तीसरे चरण को विषमचरण कहा जाता है। समचरणों में तुक का विधान स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकता है। रहीम के प्रसिद्ध उदाहरण में दूसरे और चौथे चरण के तुकांत संबंध को देखा जा सकता है।

पश्तो में मिसरअ और नामिसरअ पदों का उल्लेख मिलता है। मिसरअ पद में एक पद के दोनों चरण तुकांत होते हैं, जबकि नामिसरअ पद में पहले चरण में तुक का अभाव और दूसरे चरण में तुक की उपस्थिति बताई गई है (Hamkar 45-46)। हिन्दी और पश्तो की इस तुलना से यह स्पष्ट होता है कि दोनों परम्पराओं में चरण और तुक का महत्त्व है, लेकिन उनकी मात्रा-गणना और आंतरिक लय एक-दूसरे से पूरी तरह समान नहीं है।

9. हिन्दी एवं पश्तो के समान छन्दों का व्यतिरेकी अध्ययन

अब उन हिन्दी और पश्तो छन्दों की तुलना की जाती है जिनमें वर्णों या मात्राओं के आधार पर कम-से-कम संरचनात्मक समानता दिखाई देती है। इस तुलना में हिन्दी छन्द को आधार बनाया गया है और पश्तो के संबंधित उदाहरणों को मात्रा, बलाघात, तुक तथा चरण-विन्यास के संदर्भ में देखा गया है। यहाँ 'समान' का अर्थ पूर्ण संरचनात्मक समानता नहीं, बल्कि तुलनीय छन्दीय विशेषताओं की उपस्थिति है।

9.1 इन्द्रवज्रा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्णों का प्रयोग होता है और प्रत्येक चरण में कुल 11 वर्ण होते हैं। उदाहरण के रूप में प्रस्तुत पंक्तियाँ हैं–"होता उन्हें केवल धर्म प्यारा / सत्कर्म ही जीवन का सहारा / सत्याश्रयी साधु फकीर होते / संताप से धैर्य कभी न खोते।" पश्तो में इसके समान एक छन्द का उल्लेख है जिसमें 11 मात्राएँ हैं, प्रत्येक रुक्न की प्रथम मात्रा पर बल आता है और तुकांतता पाई जाती है। दुरानय के उदाहरण में मात्रा-गणना 11 तक की गई है (Duranay 79)। यहाँ समानता मुख्यतः मात्रा-संख्या और लयात्मक संगठन के स्तर पर है, जबकि पश्तो में बलाघात भी छन्दीय प्रवाह का आवश्यक घटक माना गया है।

9.2 तोटक

तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं और कुल 12 वर्ण होते हैं। प्रस्तुत हिन्दी उदाहरण में इसी संरचना को दिखाया गया है। पश्तो में 12 मात्राओं वाला एक तुलनीय छन्द मिलता है, जिसमें तीन रुक्न बताए गए हैं और हर तीसरी मात्रा पर बलाघात का उल्लेख किया गया है। दुरानय के उदाहरण से इसकी तुकांतता भी स्पष्ट होती है (Duranay 115)। इस प्रकार हिन्दी के 12-वर्णीय संगठन और पश्तो के 12-मात्रिक संगठन के बीच संख्या के स्तर पर साम्य है, परंतु इकाई की प्रकृति अलग है।

9.3 मालिनी

मालिनी के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण, एक मगण और दो यगण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। प्रस्तुत उदाहरण "प्रमुदित मथुरा के मानवों को बना के..." इसी संरचना का प्रतिनिधित्व करता है। पश्तो में 15 मात्राओं वाला तुलनीय छन्द दिया गया है जिसमें प्रत्येक रुक्न की दूसरी मात्रा पर बल आता है (Duranay 99)। इसलिए यहाँ हिन्दी के वर्ण-आधारित संगठन और पश्तो की मात्रा-बलाघात आधारित व्यवस्था के बीच व्यतिरेकी समानता दिखाई देती है।

9.4 अनुष्टुप

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

अनुष्टुप के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसमें पाँचवाँ वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होने का विधान बताया गया है तथा चरण की शुरुआत नगण और सगण से न होने की बात कही गई है। प्रस्तुत हिन्दी उदाहरण इस संरचना को दर्शाता है। पश्तो में आठ मात्राओं वाला छन्द इसके समान बताया गया है, जो पश्तो में सबसे छोटे छन्दों में से एक है (Duranay 113)। यहाँ समानता आठ की संख्या में है, जबकि हिन्दी में वर्ण और लघु-गुरु तथा पश्तो में मात्रा और बलाघात की भूमिका अलग है।

9.5 भुजंग प्रयात

भुजंग प्रयात के प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं और कुल 12 वर्ण होते हैं। प्रस्तुत उदाहरण में इसी छन्दीय रूप को देखा जा सकता है। पश्तो में 12 मात्राओं वाला तुलनीय छन्द दिया गया है। दुरानय के उदाहरण में 12 मात्राओं की क्रमिक गणना प्रस्तुत है (Duranay 2007)। यहाँ भी संख्या-साम्य के साथ छन्दीय इकाई की प्रकृति में अंतर बना रहता है।

9.6 पद्धरी या चौपाई

पद्धरी या चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और प्रत्येक चरण समप्रवाही बताया गया है। प्रस्तुत हिन्दी उदाहरण में चार चरणों का 16-मात्रिक संगठन दिखाया गया है। पश्तो में 'सलोरीज़' नामक छन्द का उल्लेख है जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं और जिसे पश्तो के प्रसिद्ध छन्दों में गिना गया है (Duranay 121)। इस छन्द में दोनों भाषाओं की मात्रा-संख्या का साम्य अपेक्षाकृत स्पष्ट दिखाई देता है।

9.7 तोमर

तोमर के प्रत्येक चरण में 12 मात्राएँ होती हैं और चरण के अंत में गुरु-लघु का विधान बताया गया है। प्रस्तुत हिन्दी उदाहरण "जय राम सोभा धाम..." इस छन्द की रचना को दर्शाता है। पश्तो में 12 मात्राओं वाला तुलनीय छन्द प्रस्तुत किया गया है, जिसके उदाहरण में भी 12 मात्राओं की गणना की गई है (Duranay 115)। यह तुलना बताती है कि दोनों परम्पराओं में समान मात्रा-संख्या वाले छन्द मिलते हैं, किंतु उनके आंतरिक बल, लघु-गुरु और तुक-विधान में भिन्नताएँ बनी रहती हैं।

10. तुलनात्मक निष्कर्षों का संक्षिप्त सार

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

हिन्दी छन्द	हिन्दी की प्रमुख विशेषता	पश्तो में तुलनीय रूप	मुख्य तुलनात्मक आधार
इन्द्रवज्रा	11 वर्ण; गण-विन्यास	11 मात्रिक छन्द	मात्रा-संख्या, बलाघात, तुक
तोटक	12 वर्ण; चार सगण	12 मात्रिक छन्द	संख्या, रुक्न, बलाघात
मालिनी	15 वर्ण; गण-विन्यास	15 मात्रिक छन्द	मात्रा-संख्या, बलाघात
अनुष्टुप	8 वर्ण; लघु-गुरु विधान	8 मात्रिक छन्द	संख्या और लय
भुजंग प्रयात	12 वर्ण; चार यगण	12 मात्रिक छन्द	संख्या और संरचना
पद्धरी/चौपाई	16 मात्राएँ	सलोरीज़	मात्रा-संख्या
तोमर	12 मात्राएँ; अंत गुरु-लघु	12 मात्रिक छन्द	मात्रा-संख्या और अंत-विन्यास

11. निष्कर्ष

हिन्दी एवं पश्तो छन्दों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों भाषाओं की छन्द-परम्पराओं का विकास अलग-अलग ऐतिहासिक और भाषिक पृष्ठभूमियों में हुआ है, किंतु उनके छन्दीय संगठन में अनेक तुलनीय तत्व विद्यमान हैं। हिन्दी छन्दशास्त्र संस्कृत की परम्परा से गहरे रूप में संबद्ध है, जबकि पश्तो छन्द मुख्यतः सिलाबोटोनिक व्यवस्था के आधार पर अपने विशिष्ट रूप को ग्रहण करता है। इस अंतर के कारण दोनों भाषाओं में समान संख्या दिखाई देने पर भी छन्दीय इकाई और लय का स्वरूप एक जैसा नहीं होता।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि वर्ण, मात्रा, तुक, यति, गण/रुक्न तथा चरण जैसे तत्व दोनों परम्पराओं में किसी न किसी रूप में उपस्थित हैं। इन्द्रवज्रा, तोटक, मालिनी, अनुष्टुप, भुजंग प्रयात, पद्धरी/चौपाई और तोमर जैसे हिन्दी छन्दों के लिए पश्तो में तुलनीय मात्रिक रूपों का उल्लेख मिलता है। इन समानताओं को पूर्ण समानता के रूप में नहीं, बल्कि छन्दीय संरचनाओं के बीच व्यतिरेकी और तुलनात्मक संबंध के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है। विशेष रूप से हिन्दी में वर्ण और लघु-गुरु की भूमिका तथा पश्तो में मात्रा और बलाघात का संयुक्त महत्त्व दोनों परम्पराओं की विशिष्टता को स्पष्ट करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि हिन्दी और पश्तो छन्द-व्यवस्थाएँ अनेक स्तरों पर तुलनीय हैं, यद्यपि उनकी आंतरिक प्रणाली पूर्णतः एकरूप नहीं है। यह तुलनीयता हिन्दी-पश्तो तुलनात्मक साहित्य, तुलनात्मक काव्यशास्त्र तथा छन्द-अध्ययन के लिए उपयोगी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

आधार प्रदान करती है। भविष्य में अधिक विस्तृत काव्य-सामग्री, ध्वन्यात्मक विश्लेषण और बड़े पाठ-समुच्चय के आधार पर दोनों भाषाओं की छन्दीय समानताओं और भिन्नताओं का और अधिक सूक्ष्म अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Editorial Team. "छन्द: परिभाषा, भेद एवं उदाहरण." My Coaching, Feb. 2026, https://mycoaching.in/chhand.

Duranay, Darwesh. Pakhto Arūz. Akram Press, 2007.

Hamkar, Mohammad Ibrahim. Pakhto Wazn Pohan. 3rd ed., Hamkar Khparanduy Tolana, 1398 [2019].

Mishra, Bhagirath. Kavyashastra. 26th ed., Vishwavidyalaya Prakashan, 2015.

Pan, Saraswati, and Govind Pandey. Hindi Bhasha evam Sahitya ka Vastunishtha Itihas. Abhivyakti Prakashan, 2017.

Rishad, Abdul Shakoor. De Pakhto Nazm Arūzi Sistam. 28th ed., Allama Rishad Academy, 2016.

Singh, Vijaypal. Bharatiya Kavyashastra. Jaybharati Prakashan, 1998.

Singh, Yogindr Pratap. Hindi Kavyashastra ke Muladhar. 2nd ed., Lokbharati Prakashan, 2012.

Kabir. Kabir Granthavali. Edited by Shyamsundar Das, Rajkamal Prakashan, 2011.

Chaturvedi, Ramashankar. Kavya ke Siddhant aur Svarup. Sahityagar, 2017.